प्रातः क्लास 22-11-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

ओमशान्ति। रूहानी बच्चों अथवा आत्माओं प्रति बाप बैठ समझाते हैं। अपने को आत्मा तो समझना है ना। बाप ने बच्चों को समझाया है पहले2 यह प्रैक्टीस करो कि हम आत्मा हैं न कि शरीर। जब अपने को आत्मा समझेंगे तब ही परम पिता परमात्मा को याद कर सकेंगे। अपने को आत्मा न समझेंगे तो जरूर फिर लौकिक सम्बन्धी, धंधा आदि ही याद आते रहेंगे। इसलिये पहले2 तो यह प्रैक्टीस होनी चाहिए हम आत्मा हैं तो फिर रूहानी बाप की याद ठहरेगी। बाप यही शिक्षा देते हैं अपने को देह न समझो। यह ज्ञान बाप एक ही बार सारे कल्पमें देते हैं। फिर 5000वर्ष बाद यह समझानी मिलेगा। अपने को आत्मा समझेंगे तो बाप ही याद आवेगा। आधा कल्प तुमने अपने को देह समझा है। अभी अपने को आत्मा समझना है। जैसे तुम आत्मा हो, मैं भी आत्मा ही हूं। परन्तु सुप्रीम हूं। मैं हूं ही आत्मा तो मुझे कोई देह याद पड़ते ही नहीं। यह दादा तो शरीरधारी है ना। वह बाप है ~~सारे~~ निराकार। यह प्रजापिता ब्रह्मा तो साकार हो गया। शिव बाबा का असली नाम शिव ही है। वह है ही आत्मा। सिर्फ वह ऊंच ते ऊंच अर्थात सुप्रीम आत्मा है। सिर्फ इस समय ही आकर इस शरीर में प्रवेश करते हैं। वह कब देहअभिमानी हो न सके। देहअभिमानी साकारी मनुष्य होते हैं। वह तो है ही निराकार। उनको यह प्रैक्टीस करानी है। कहते हैं तुम अपने को आत्मा समझो। मैं आत्मा हूं मैं आत्मा हूं यह पाठ बैठ पढ़ो। मैं आत्मा हूं शिव बाबा का बच्चा हूं। आत्मा हूं। यह पक्की प्रैक्टीस हो जाये। हर बात की प्रैक्टीस चाहिए ना। बाप कोई नई बात नहीं समझाते हैं। तुम जब अपने को आत्मा पक्का2 समझेंगे तब पक्का बाप भी याद रहेगा। देहअभिमान रहेगा तो बाप को याद कर न सकेंगे। आधा कल्प तो देह का अहंकार रहता है। अभी तुम को सिखलाता हूं तुम अपने को आत्मा समझो। सतयुग में ऐसे कोई सिखलाता नहीं है कि अपने को आत्मा समझो। शरीर पर नाम तो पड़ता ही है। नहीं तो एक दो को बुलावे कैसे। यहां तुमने जो बाप से वरसा पाया है वही प्रारब्ध वहां पाते हो। बच्चे बुलावेंगे तो नाम से ना। कृष्ण भी शरीर का नाम है ना। नाम बिगर तो कारोबार आदि चल न सके। ऐसे नहीं कि वहां भी कहेंगे अपने को आत्मा समझो। वहां तुम कोई आत्माअभिमानी हो रहते हो ऐसे भी नहीं हैं। यह प्रैक्टीस तुमको अभी कराई जाती है। क्योंकि पाप बहुत सिर पर चढ़े हुये हैं। आते2 थोड़ा2 पाप चढ़ते2 अभी फुल पापी आत्मा बन पड़े हो। आधा कल्प के लिये जो जमा किया है वह खलास भी तो होगा ना। आते2 कम हो जाता है। सतयुग में तुम सतोप्रधान त्रेता में सतो बन जाते हो। वरसा अभी मिलता है। अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से ही वरसा मिलता है। देही अभिमानी बनने की शिक्षा बाप ही देते हैं। सतयुग में यह शिक्षा नहीं मिलती। अपने2 नाम पर ही चलते हैं। यहां तुम हरेक को पापात्मा से पुण्यात्मा बनना है। याद की बल से ही पुण्यात्मा बनेंगे। सतयुग में इस शिक्षा की दरकार है नहीं। न यह शिक्षा ले जाते हो। वहां न यह ज्ञान न योगले जाते हो। तुमको पतित से पावन अभी ही बनना है। फिर आते2 कला कम होती है। जैसे चन्द्रमा की कला कम होते2 लीक जाकर रहता है। तो इसमें मुंझो नहीं। कुछ भी न समझो तो बाप से पूछो। पहले तो यह पक्का निश्चय करो हम आत्मा हैं। तुम्हारी आत्मा ही अभी तमोप्रधान बनी है। पहले सतोप्रधान थी। फिर दिन प्रति दिन कला कम होती जाती है। मैं आत्मा हूं यह पक्का न होने से ही तुम बाप को भूलते हो। पहले2 भूल बात ही यह है आत्म-अभिमानी बनना पड़े। फिर बाप भी याद आवेगा। बाप याद आवेगा तो वरसा भी याद आवेगा। वरसा याद आवेगा तो पवित्र भी रहेंगे। दैवीगुणभी रहेंगे। एमआबजेक्ट तो सामने है ना। यह है गाडली युनिवर्सिटी। भगवान पढ़ाते हैं। देहीअभिमानी भी वही बना सकते हैं। और कोई यह हुनर जानता ही नहीं। एक बाप ही सिखलाते हैं। यह दादा भी पुरुषार्थ करते हैं। बाप तो कब देह लेते ही नहीं जो उनको देही अभिमानी बनने का पुरुषार्थ करना पड़े। वह सिर्फ इस समय ही आते हैं तुमको देहीअभिमानी बनाने। यह भी कहावत है जिनके माथे आमला ... बहुत धंधा आदि टूमच होता है

तो फर्सत नहीं मिलती। और जिनको फर्सत है वह आते हैं बाबा के सामने पुरुषार्थ करने। कोई नये2 भी आते हैं। समझते हैं नालेज तो बड़ी अच्छी है। गीता में भी यह अक्षर है मुझ बाप को याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश हों। तो बाप यह समझाते हैं। बाप कोई को दोष नहीं देते हैं। यह तो जानते हैं तुमको पावन से पतित बनना ही है। और हमको आकर पतितसे पावन बनाना ही है। यह बना बनाया ड्रामा है। वह सभी गुरु लोग तुमको डूबाते हैं, मैं तुमको पार करता हूं। वह तो अपने को भगवान कह अपनी पूजा बैठ कराते हैं। उनको हिरण्यकश्यप कहा जाता है। यह तो अनादि बना बनाया खेल है। इसमें कोई की निन्दा की बात ही नहीं। अभी तुमको ज्ञान मिला है तो ड्रामा अच्छा लगना चाहिए। कैसा वन्डरफुल नाटक है। कितने एक्टर्स हैं। आत्मायें कितने छोटे2 हैं। हरेक में पार्ट नूंधा हुआ है। यह समझाने की बात है। ग्लानी की बात नहीं। शंकराचार्य बैठ अपनी पूजा कराते हैं यह तो रांग है ना। इससे ही मनुष्य पतित बनते हैं। यह समझाया जाता है बाकी ग्लानी की कोई बात नहीं। तुम अभी ज्ञान को अच्छी रीत जानते हो। और तो कोई नहीं जानता। ज्ञान का सागर एक ही बाप है। और कोई में ज्ञान है नहीं। कोई भी ईश्वर को जानते ही नहीं। इसलिये नास्तिक कहलाये जाते हैं। अभी बाप तुम बच्चों को कितना समझदार बनाते हैं। टीचर रूप में बैठ शिक्षा देते हैं। कैसे यह सृष्टि का चक्र फिरता है। यह शिक्षा मिलने से तुम भी सुधरते हो। भारत जो शिवालय था सो अभी वेश्यालय है ना। इसमें ग्लानी की कोई बात नहीं। यह खेल है जो बाप समझाते हैं। तुम देवता से असुर कैसे बने हो। ऐसे नहीं कहते क्यों बने। बाप आये ही हैं बच्चों को अपना परिचय देने। और सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है यह नालेज देते हैं। मनुष्य ही जानेंगे ना। अभी तुम जानकर फिर देवता बनते हो। यह पढ़ाई है मनुष्यसे देवता बनने की। जो बाप हो बैठ पढ़ाते हैं। यहां तो सभी मनुष्य ही=हैं मनुष्य हैं। देवतायें तो इस सृष्टि पर आ भी न सकें। जो टीचर बन पढ़ावें। पढ़ाने वाला बाप देखो कैसे आते हैं। गायन भी है परम पिता परमात्मा कोई रथ लेते हैं। यह पूरा दिखाते नहीं कौन सा रथ लेते हैं। त्रिमूर्ति का राज भी कोई समझते नहीं। बाप कहते हैं मैं ब्रह्मा द्वारा ... मैं कौन हूं? परम आत्मा अर्थात परमात्मा हूं। जो जो हैं सो अपना परिचय तो देंगे ना। अहंकार की बात नहीं। यह तो कहते नहीं कि मैं परमात्मा हूं। यह तो समझ की बात है ना। यह तो परमात्मा के महावाक्य हैं सभी आत्माओं का बाप एक है। इनको तो दादा कहा जाता है। यह भाग्यशाली रथ है। नाम भी ब्रह्मा रखा है। क्योंकि ब्राह्मण चाहिए ना। आदि देव प्रजापिताब्रह्मा जो। प्रजापिता नाम है ना। प्रजा का पिता। अभी प्रजा कौन सी है। प्रजापिता ब्रह्मा शरीरधारी है तो एडाप्ट किया है बच्चों को। शिव बाबा समझाते हैं मैं एडाप्ट नहीं करता हूं। तुम सभी आत्मायें तो सदैव मेरे बच्चे ही हो। मैं तुमको बनाता नहीं हूं। मैं तो तुम आत्माओं का अनादि अविनाशी बाप हूं। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। फिर भी कहते हैं अपने को आत्मा समझो। तुम पुरानी दुनिया का सन्यास करते हो बुधि से। जानते हैं सभी वापस जावेंगे इस दुनिया से। ऐसे नहीं सन्यास कर जंगल में जाना है। सारी दुनिया का सन्यास हम अपने घर चले जावेंगे। इसलिये कोई भी चीज याद न आवे। सिवाय एक बाप के। 60 वर्ष की आयु हुई तो बस। फिर वाणी से परे वानप्रस्त जाने का पुरुषार्थ करना चाहिए। यह वानप्रस्त की बात है अभी की। भक्ति मार्ग में तो वानप्रस्त का किसको भी पता नहीं है। वानप्रस्त का अर्थ नहीं बता सकते हैं। वाणी से परे मूल वतन को कहेंगे। जहां सभी आत्मायें निवास करती हैं। जिसको ब्राह्मण्ड कहते हैं। तो अभी सभी की वानप्रस्त अवस्था है। सभी को जाना है घर। वह है आत्माओं का घर। शास्त्रों में दिखाते हैं आत्मा अंगुष्टे मिसल है। फिर भी कहते हैं भृकुटि के बीच सितारा चमकता है। तब क्या समझें। अंगुष्टे मिसल को ही याद करते हैं। स्टार को याद कैसे करें पूजा कैसे करें। तो बाप समझाते हैं तुम देहअभिमान में जब आते हो तो पुजारी बन जाते हो। भक्ति का समय शुरु होता है। जिसको भक्ति कल्ट कहते हैं। ज्ञान कल्ट अलग है। ज्ञान और भक्ति इकट्ठी नहीं हो सकती। दिन और रात इकट्ठे नहीं हो सकते। दिन को सुख रात को दुःख कहा जाता है। —

कहते हैं प्रजापिता ब्रह्मा का दिन। फिर रात। तो प्रजा और ब्रह्मा दोनों जरूर इकट्ठे ही होंगे। तुम समझते हो हम ब्राह्मण हो आधा कल्प सुख भोगते हैं फिर आधा कल्प दुःख। यह बुद्धि से समझने की बातें हैं। यह भी तुम जानते हो सभी बाप को याद नहीं करते। फिर बाप भी खुद समझाते रहते हैं अपने को आत्मा समझो और मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। यह पैगाम सभी को पहुंचाना है। सर्विस करनी है। जो सर्विस ही नहीं करते हैं तो वह फूल नहीं ठहरे ना। बागवान बगीचे में आवेंगे तो उनको फूल ही सामने चाहिए जो सर्विसएबुल हो। बहुतों का कल्याण करते हैं। जिनको देह अभिमान है वह खुद भी समझेंगे हम फूल तो है नहीं। बाबा के सामने तो अच्छे2 फूल बैठे तो बाप की उन पर नजर जावेगी। डांस भी अच्छा करेगा। (डांसिंग गर्ल का मिसाल) स्कूल में भी टीचर तो जानते हैं कौन नम्बरवन, कौन नम्बर दू, थ्री में हैं। बाबा भी अटेंशन सर्विस करने वालों तरफ हो जावेंगी। दिल पर भी वह चढ़ते हैं। डिस-सर्विस करने वाले थोड़े ही दिल पर चढ़ते हैं। बाप पहली2 मुख्य बात समझाते हैं अपने को आत्मा निश्चय करो तब बाप की याद ठहरेगी। देहअभिमान होगा तो बाप की याद ठहरेगी नहीं। लौकिक सम्बन्धी तरफ, धंधे धोरी तरफ बुद्धि चली जावेगी। देही अभिमानी होने से पारलौकिक बाप ही याद आवेगा। बाप को तो बहुत ही प्यार से याद करना चाहिए। अपने को आत्मा समझना, इसमें ही मेहनत है। एकान्त चाहिए। सात रोज की भट्ठी का कोर्स बहुत कड़ा है। कोई की याद न आये। किसको चिट्ठी नहीं लिख सकते। इसलिये कहा जाता है घर में रह कर प्रैक्टीस करो। भक्ति के लिये भक्त लोग भी अलग कोठरी बना देते हैं। अन्दर कोठरी में बैठ माला फिरते हैं। तो इस याद की यात्रा में भी एकान्त चाहिए। एक बाप को ही याद करना है। इसमें कुछ जबान चलाने की बात नहीं। इस याद के अभ्यास में फर्सत चाहिए। भक्तों को भी कुछ फर्सत होती है तब तो अभ्यास करते हैं। सन्यासी भागकर जाकर जंगल में ब्रह्म को याद करते हैं। पवित्र रहते थे। विकारों का सन्यास करते थे। उन्हों का मार्ग ही ऐसा था। शुरू में भारत की सेवा करते थे। फिर अभी वह भी बिगर गये हैं। तमोप्रधान होने कारण वापस घर लौट आते हैं। मनुष्यों की कितनी अन्धश्रद्धा होती है। जिन स्त्रीयों को वह विधवा बना देते हैं फिर वह जब रजो तमो में आते हैं तो वही स्त्रीयां उन्हों को अपना गुरु बनाये उन्हों की पूजा बैठ करती हैं। घर से बाप चला जाता है तो सभी उदास हो जाते हैं। क्योंकि बाप किंयटर है ना। यह है बेहद का। प्रजापिता ब्रह्मा तो बेहद का ठहरा ना। एडाप्ट करते हैं। शिव बाबा एडाप्ट नहीं करते हैं। उनके तो बच्चे सदैव है ही। तुम कहेंगे शिव बाबा के हम बच्चे आत्मायें अनादि हैं ही। आत्मायें रहती ही हैं ब्रह्मतत्व में। तुमको एडाप्ट किया गया है। हरेक बात अच्छी रीत समझने की है। बाप रोज2 बच्चों को समझाते हैं कहते हैं बाबा याद नहीं रहते हैं। बाप कहते हैं इसमें थोड़ा समय निकालना चाहिए। कोई2 ऐसे होते हैं जो समय बिल्कुल दे नहीं सकते। बुद्धि में [illegible] है। फिर याद की यात्रा होवे कैसे।

बाप समझाते हैं मूल बात ही यह है। अपने को आत्मा समझो। मुझ बाप को याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। मैं आत्मा हूं। आत्मा हूं। शिव बाबा का बच्चा हूं। यह भी निश्चय हुआ ना। इसमें मेहनत चाहिए। आशीर्वाद की बात नहीं। यह तो एक्टाई है। इसमें कृपा वा आशीर्वाद नहीं चलती। मैं कब तुम्हारे पर हाथ रखता हूं क्या। तुम जानते हो बेहद के बाप से हम वरसा ले रहे हैं। अमरभव, अमुक आयुष्मान भव। इसमें सभी आ जाता है। तुम फुल एज पाते हो। वहां कब अकाले मृत्यु नहीं होता। यह वरसा कोई साधु सन्त आदि दे न सके। वह तो कहते हैं पुत्रवान भव। तो मनुष्य समझते हैं उनकी ही कृपा से बच्चा हुआ। बस। जिसको बच्चा न होगा वह जाकर उनका शिष्य बनेंगे। ज्ञान तो कुछ है नहीं। भक्ति में यह सभी बातें होती हैं। ज्ञान तो एक ही बार मिलता है। यह है अव्यभिचारी ज्ञान। जिसकी आधा कल्प प्रारब्ध चलती है। फिर है अज्ञान। भक्ति को अज्ञान कहा जाता है। हरेक बात अच्छी रीत समझाई जाती है। इसमें कैरेक्टर्स बहुत अच्छी चाहिए। यह भी

रूहानी ब्रह्मा टीचर है। इन से कुछ करेंगे तो अवस्था एकदम गिर पड़ेंगे। अपन को आपे ही घाटा डाल देंगे। पद भ्रष्ट हो जावेंगा। तमोप्रधान से अभी सतोप्रधान बनना है। न बनेंगे तो नतीजा क्या होगा। रह जावेंगे। तमोप्रधान रह जावेंगे। आपे ही अपन को सरापित करते हैं। फिर सजा के लायक बन जावेंगे। नपढ़ेंगे तो जरूर नापास हो जावेंगे। न पढ़ते हैं - दैवी गुण नहीं धारण करते हैं तो अपना ही नुकसान कर देते हैं। सतोप्रधान कदाचित बन न सकेंगे। बहुत सजा खानी पड़ेगी। डिस सर्विस करते हैं तो न अपना न दूसरों का कल्याण कर सकते हैं। बहुत बच्चे हैं जो बहुतों का कल्याण करते हैं। यज्ञ की बड़ी मदद देते हैं। भल ज्ञान इतनान है, किसको समझा नहीं सकते हैं। परन्तु दिल बड़ी साफ है। जो कुछ कमाते हैं कहते हैं शिव बाबा यह आपका है। बाबा भी कहते हैं 60 वर्ष कमाई की है अभी वानप्रस्त लो। स्थूल कमाई छोड़ दो। बाप को याद करो। याद की यात्रा बहुत जरूरी है। सृष्टि को पवित्र बनाना है। धंधा आदि सभी छोड़ो। 60 वर्ष के बाद वानप्रस्त अवस्था हुई तब बाप ने प्रवेश किया। बाप कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में आकर हमने प्रवेश किया है और तुमको शिक्षा रहा हूं। इसमें बड़ी अच्छी बुद्धि चाहिए। जराभी देह अभिमान न रहे। बड़ी मीठी अवस्था हो। फट फीटा नहीं होना है। जो डिस सर्विस करते हैं वह तो अपना ही नुकसान करते हैं। डिससर्विस भी अपनी करते हैं। हर बात में समझ चाहिए। तुम जानते हो हम कैसे देवी देवताएं थे। अभी फिर बनना है। कल्प2 हम ही बनते हैं। अभी जो जो जितना पुरुषार्थ करेंगे वह बनेंगे। लिखते हैं बाबा यह ज्ञान नहीं लेते हैं। डिस सर्विस करते हैं। डिस सर्विस करने वाले भी बहुत निकल पड़ते हैं। कुछ थोड़ा ही कहो तो कहेंगे मैं डिस सर्विस करता हूं। सभी को कहुंगा कि यह सभी गपोड़े हैं। अभी देखना हम क्या करते हैं। बाप कहते हैं यह कोई नई बात नहीं है। कल्प कल्प तुम ऐसे अपना पद भ्रष्ट करते हो। बाकी स्थापना तो हो ही जाने का है। गुस्से में आते हैं तो फिर कह देते हैं देखना हम क्या करते हैं। इन से भी ऐसे करते हैं। यह भूल जाते हैं कि यह किसको दरकार है। अवस्था और ढरक जाती है। सोणा दण्ड पड़ जाता है। सभी भूत आकर लग जाते हैं। यह जन्म जन्मान्तर के 5 भूत मनुष्यों के लगे हुये हैं। उनकी अवस्था को ही डांवा डोल कर देते हैं। अनेक प्रकार के विघ्न पड़ते हैं। बहुत डिससर्विस करते हैं। फिर एकदम गिर पड़ते हैं। सोणा दण्ड पड़ जाता है। बहुत सजा खाते हैं। इसमें बहुत मीठा बहुत रमणीक होना चाहिए। बाप कितना कहते हैं बच्चे मीठे मीठे बनो। अपन को आत्मा समझो। पहले नम्बर की अवज्ञा करते हैं बेहद के बाप की। उनको सर्वव्यापी कह देते। कुत्ते बिल्ले ठिक्कर भित्तर में है। कच्छ अवतार मच्छ अवतार परशुराम अवतार लेते हैं। शिव बाबा कोई के तन में प्रवेश कर तलवार से मारते रहेंगे क्या। यह सभी हैं नानसेन्स की बातें। नानसेन्स बकते2 तमोप्रधान बन पड़े हैं। तुम बच्चों को अभी पुरुषार्थ करना है। पहली2 बात अपन को आत्मा समझो। देही अभिमानी बनना है। याद की यात्रा पर रहना है। याद की यात्रा से ही जाना है। आत्मा सभी से फास्ट राकेट है। है कितनी छोटी परन्तु सभी से तीखी जाती है। कितना तीखा राकेट है। सेकण्ड में एक शरीर से निकल दूसरे गर्भ में कहां का कहां जाकर प्रवेश करती है। चाहे विलायत में हो चाहे कहां भी हो। इन बातों का मनुष्यों को पता नहीं है। आत्मा को सारा पार्ट मिला हुआ है। आत्मा ही शरीर धारण कर और पार्ट बजाती है। 84 जन्मों का पार्ट इतनी छोटी आत्मा में भरा हुआ है। तो तुम बच्चे कितने बड़े हो। भगवान तुमको पढ़ाते हैं। जो बहुत पापात्मा बन जाते हैं उन्हों को ही बाप आकर पुण्यात्मा बनाते हैं। यह नालेज भी सिर्फ अभी ही मिलती है। भगवान बैठ पढ़ाते हैं। मनुष्यों को तो यह भी पता नहीं है कि भगवान किसको कहा जाता है। तमोप्रधान बुद्धि होने कारण कह देते भगवान तो सर्वव्यापी है। बाप आकर आसुरी स्वभाव के पतित मनुष्यों को दैवी स्वभाव वाला देवता बनाते हैं। हरेक अपने दिल से पूछे हम क्या बन रहे हैं।

अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।